

English

MUSKMELON – PACKAGE OF PRACTICES

Climate

Muskmelon thrives best and develops the highest flavor in a hot dry climate. It is grown as a summer crop.

Soil

Muskmelon is mainly grown on sandy and sandy-loam soils on river beds. Other soil types are also suitable for cultivation. The optimum soil pH is 6 to 7.

Sowing of Seeds

Seeds may be sown from November to March in plains and April to May in hills. Transplanting of about one-week-old seedlings may also be done. Seed rate is 2 to 3 kg/ha.

Manures and Fertilizers

Apply 30–50 cartloads of FYM at the time of soil preparation. 80 kg Nitrogen, 40 kg Phosphorus and Potassium are recommended. Half dose of Nitrogen and full dose of Phosphorus and Potassium should be applied at sowing. Remaining half Nitrogen should be applied one month after transplanting.

Irrigation

Irrigation should be given whenever necessary.

Harvesting

Maturity is judged by change in external fruit colour, softening of rind and development of abscission layer. Mature fruits slip easily from the vine.

हिंदी (Hindi)

खरबूजा – खेती की विधियाँ

जलवायु

खरबूजा गर्म और शुष्क जलवायु में अच्छी तरह बढ़ता है तथा सर्वोत्तम स्वाद देता है। इसे ग्रीष्मकालीन फसल के रूप में उगाया जाता है।

मिट्टी

खरबूजा मुख्यतः रेतीली एवं बलुई दोमट मिट्टी में नदी किनारों पर उगाया जाता है। अन्य प्रकार की मिट्टियाँ भी इसकी खेती के लिए उपयुक्त हैं। मिट्टी का उपयुक्त pH 6 से 7 है।

बीज बुवाई

मैदानी क्षेत्रों में नवंबर से मार्च तथा पहाड़ी क्षेत्रों में अप्रैल से मई तक बुवाई की जाती है। एक सप्ताह पुराने पौधों की रोपाई भी की जा सकती है। बीज दर 2 से 3 किग्रा/हेक्टेयर है।

खाद एवं उर्वरक

भूमि तैयारी के समय 30–50 गाड़ी गोबर खाद डालें। 80 किग्रा नाइट्रोजन, 40 किग्रा फास्फोरस एवं पोटैश की सिफारिश की जाती है। बुवाई के समय नाइट्रोजन की आधी मात्रा तथा फास्फोरस और पोटैश की पूरी मात्रा दें। बची हुई आधी नाइट्रोजन रोपाई के एक माह बाद दें।

सिंचाई

आवश्यकतानुसार सिंचाई करें।

कटाई

फल की बाहरी रंगत में परिवर्तन, छिलके का मुलायम होना तथा डंठल पर अलगाव परत बनने से पकाव की पहचान होती है। पके फल बेल से आसानी से अलग हो जाते हैं।

తెలుగు (Telugu)

ఖర్బూజా - సాగు విధానాలు

వాతావరణం

ఖర్బూజా వేడి మరియు పొడి వాతావరణంలో బాగా పెరిగి మంచి రుచిని ఇస్తుంది. ఇది వేసవి పంటగా సాగు చేస్తారు.

నెల

ఖర్బూజాను ప్రధానంగా ఇసుక మరియు ఇసుక మట్టి నెలల్లో, నది ఒడ్డున సాగు చేస్తారు. ఇతర రకాల నెలలు కూడా అనుకూలంగా ఉంటాయి. నెల pH 6 నుండి 7 వరకు ఉండాలి.

విత్తనాల విత్తకం

మైదాన ప్రాంతాల్లో నవంబర్ నుండి మార్చి వరకు, కొండ ప్రాంతాల్లో ఏప్రిల్ నుండి మే వరకు విత్తుకోవచ్చు. ఒక వారం వయస్సు గల నాట్లను నాటవచ్చు. విత్తన మోతాదు ఎకరాకు 2-3 కిలోలు.

ఎరువులు మరియు పశువుల ఎరువు

భూమి సిద్ధం చేసే సమయంలో 30-50 బండ్ల పశువుల ఎరువును వేయాలి. 80 కిలోల నత్రజని, 40 కిలోల భాస్వరం మరియు పొటాష్ సిఫార్సు చేయబడుతుంది. విత్తే సమయంలో నత్రజని సగం మోతాదు మరియు భాస్వరం, పొటాష్ పూర్తి మోతాదు వేయాలి. మిగిలిన నత్రజనిని నాటిన ఒక నెల తర్వాత వేయాలి.

నీటిపారుదల

అవసరమైనప్పుడు నీరు పెట్టాలి.

కోత

పండ్ల పై రంగు మారడం, తొక్క మెత్తబడటం మరియు పండు వేరు అయ్యే పొర ఏర్పడటం ద్వారా పకాన్ని గుర్తిస్తారు. పండిన పండ్లు తీగ నుండి సులభంగా వేరవుతాయి.

मराठी (Marathi)

खरबूज – शेती पद्धती

हवामान

खरबूज गरम आणि कोरड्या हवामानात उत्तम वाढते व चांगली चव देते. हे उन्हाळी पीक आहे.

माती

खरबूज मुख्यतः वालुकामय आणि गाळयुक्त जमिनीत नदीकाठी घेतले जाते. इतर प्रकारची जमीनही योग्य आहे. जमिनीचा pH 6 ते 7 असावा.

बियाणे पेरणी

मैदानी भागात नोव्हेंबर ते मार्च आणि डोंगराळ भागात एप्रिल ते मे दरम्यान पेरणी करावी. एक आठवड्यांची रोपे लावू शकता. बियाणे दर 2 ते 3 किलो/हेक्टर आहे.

खते व खत व्यवस्थापन

जमीन तयार करताना 30-50 गाड्या शेणखत द्यावे. 80 किलो नत्र, 40 किलो स्फुरद आणि पालाश द्यावे. पेरणीवेळी नत्राची अर्धी मात्रा आणि स्फुरद व पालाशाची पूर्ण मात्रा द्यावी. उरलेली नत्र मात्रा लागवडीनंतर एका महिन्याने द्यावी.

सिंचन

गरजेनुसार पाणी द्यावे.

काढणी

फळाचा बाहेरील रंग बदलणे, साल मऊ होणे आणि देठाजवळ वेगळेपणाची थर तयार होणे ही परिपक्वतेची चिन्हे आहेत. पिकलेली फळे वेलीपासून सहज सुटतात.

ಕನ್ನಡ (Kannada)

ಖಬರ್‌ಜ - ಬೆಳೆಗಾರಿಕೆ ವಿಧಾನಗಳು

ಹವಾಮಾನ

ಖಬರ್‌ಜ ಬಿಸಿ ಮತ್ತು ಒಣ ಹವಾಮಾನದಲ್ಲಿ ಉತ್ತಮವಾಗಿ ಬೆಳೆಯುತ್ತದೆ ಹಾಗೂ ಉತ್ತಮ ರುಚಿ ನೀಡುತ್ತದೆ. ಇದನ್ನು ಬೇಸಿಗೆ ಬೆಳೆವಾಗಿ ಬೆಳೆಯಲಾಗುತ್ತದೆ.

ಮಣ್ಣು

ಖಬರ್‌ಜವನ್ನು ಮುಖ್ಯವಾಗಿ ಮರಳು ಮತ್ತು ಮರಳು ಮಿಶ್ರಿತ ಮಣ್ಣಿನಲ್ಲಿ ನದಿ ತೀರ ಪ್ರದೇಶಗಳಲ್ಲಿ ಬೆಳೆಸಲಾಗುತ್ತದೆ. ಇತರ ಮಣ್ಣಿನ ಪ್ರಕಾರಗಳೂ ಸಹ ಸೂಕ್ತವಾಗಿವೆ. ಮಣ್ಣಿನ pH 6 ರಿಂದ 7 ಇರಬೇಕು.

ಬೀಜ ಬಿತ್ತನೆ

ಮೈದಾನ ಪ್ರದೇಶಗಳಲ್ಲಿ ನವೆಂಬರ್ ರಿಂದ ಮಾರ್ಚ್ ಹಾಗೂ ಬೆಟ್ಟ ಪ್ರದೇಶಗಳಲ್ಲಿ ಏಪ್ರಿಲ್ ರಿಂದ ಮೇ ವರೆಗೆ ಬಿತ್ತನೆ ಮಾಡಬಹುದು. ಒಂದು ವಾರದ ಮೊಳಕೆ ಗಿಡಗಳನ್ನು ನಾಟಿ ಮಾಡಬಹುದು. ಬೀಜ ಪ್ರಮಾಣ 2 ರಿಂದ 3 ಕೆಜಿ/ಹೆಕ್ಟೇರ್.

ಗೊಬ್ಬರ ಮತ್ತು ರಸಗೊಬ್ಬರ

ಭೂಮಿ ಸಿದ್ಧಪಡಿಸುವಾಗ 30-50 ಗಾಡಿ ಎಫ್‌ವೈಎಂ ಹಾಕಬೇಕು. 80 ಕೆಜಿ ನೈಟ್ರೋಜನ್, 40 ಕೆಜಿ ಫಾಸ್ಪರಸ್ ಮತ್ತು ಪೊಟ್ಯಾಶ್ ಶಿಫಾರಸು ಮಾಡಲಾಗಿದೆ. ಬಿತ್ತನೆಯ ಸಮಯದಲ್ಲಿ ನೈಟ್ರೋಜನ್ ಅರ್ಧ ಭಾಗ ಮತ್ತು ಫಾಸ್ಪರಸ್ ಹಾಗೂ ಪೊಟ್ಯಾಶ್‌ನ ಪೂರ್ಣ ಪ್ರಮಾಣ ಹಾಕಬೇಕು. ಉಳಿದ ನೈಟ್ರೋಜನ್ ಅನ್ನು ಒಂದು ತಿಂಗಳ ನಂತರ ಹಾಕಬೇಕು.

ನೀರಾವರಿ

ಅಗತ್ಯವಿದ್ದಾಗ ನೀರಾವರಿ ಮಾಡಬೇಕು.

ಕೊಯ್ಲು

ಹಣ್ಣಿನ ಹೊರಬಣ್ಣ ಬದಲಾವಣೆ, ಸಿಪ್ಪೆ ಮೃದುವಾಗುವುದು ಮತ್ತು ಬೇರ್ಪಡುವ ಪದರ ಬೆಳೆಯುವುದರಿಂದ ಹಣ್ಣಿನ ಪಕ್ವತೆ ತಿಳಿಯುತ್ತದೆ. ಹಣ್ಣಾದ ಫಲಗಳು ಬೆಳ್ಳಿಯಿಂದ ಸುಲಭವಾಗಿ ಬೇರ್ಪಡುತ್ತವೆ.

தமிழ் (Tamil)

முலாம்பழம் - சாகுபடி முறைகள்

காலநிலை

முலாம்பழம் வெப்பமான மற்றும் உலர்ந்த காலநிலையில் சிறப்பாக வளர்ந்து நல்ல சுவையைக் கொடுக்கும். இது கோடை பயிராக பயிரிடப்படுகிறது.

மண்

மணல் மற்றும் மணற்பாங்கான மண்ணில், குறிப்பாக ஆற்றங்கரைகளில் பயிரிடப்படுகிறது. பிற மண் வகைகளும் ஏற்றவை. மண்ணின் pH அளவு 6 முதல் 7 வரை இருக்க வேண்டும்.

விதைப்பு

சமவெளிப் பகுதிகளில் நவம்பர் முதல் மார்ச் வரை மற்றும் மலைப்பகுதிகளில் ஏப்ரல் முதல் மே வரை விதைக்கலாம். ஒரு வாரம் வயதான நாற்றுகளையும் நடலாம். விதை அளவு 2-3 கிலோ/ஹெக்டேர்.

உரங்கள் மற்றும் இயற்கை உரம்

நிலத் தயாரிப்பின் போது 30-50 வண்டி தொழு உரம் இட வேண்டும். 80 கிலோ நைட்ரஜன், 40 கிலோ பாஸ்பரஸ் மற்றும் பொட்டாசியம் பரிந்துரைக்கப்படுகிறது. விதைக்கும் போது நைட்ரஜனின் பாதி அளவு மற்றும் பாஸ்பரஸ், பொட்டாசியம் முழு அளவு இட வேண்டும். மீதமுள்ள நைட்ரஜனை ஒரு மாதத்திற்குப் பிறகு இட வேண்டும்.

நீர்ப்பாசனம்

தேவையானபோது நீர்ப்பாசனம் செய்ய வேண்டும்.

அறுவடை

பழத்தின் வெளிப்புற நிறம் மாறுதல், தோல் மென்மையாகுதல் மற்றும் பிரியும் அடுக்கு உருவாகுதல் மூலம் பழுத்த நிலை அறியப்படுகிறது. பழுத்த பழங்கள் கொடியிலிருந்து எளிதாக பிரியும்.

বাংলা (Bengali)

খরমুজ – চাষ পদ্ধতি

জলবায়ু

খরমুজ গরম ও শুষ্ক আবহাওয়ায় ভালো জন্মায় এবং সর্বোত্তম স্বাদ দেয়। এটি গ্রীষ্মকালীন ফসল।

মাটি

খরমুজ প্রধানত বেলে ও দোআঁশ মাটিতে নদীর তীরে চাষ করা হয়। অন্যান্য মাটিও উপযোগী। মাটির pH 6 থেকে 7 হওয়া উচিত।

বীজ বপন

সমতল অঞ্চলে নভেম্বর থেকে মার্চ এবং পাহাড়ি অঞ্চলে এপ্রিল থেকে মে পর্যন্ত বপন করা হয়। এক সপ্তাহ বয়সী চারা রোপণ করা যায়। বীজের হার 2–3 কেজি/হেক্টর।

সার ও জৈব সার

জমি প্রস্তুতির সময় 30–50 গাড়ি গোবর সার প্রয়োগ করুন। 80 কেজি নাইট্রোজেন, 40 কেজি ফসফরাস ও পটাশ প্রয়োগের সুপারিশ করা হয়। বপনের সময় নাইট্রোজেনের অর্ধেক এবং ফসফরাস ও পটাশের সম্পূর্ণ মাত্রা প্রয়োগ করুন। অবশিষ্ট নাইট্রোজেন এক মাস পরে প্রয়োগ করুন।

সেচ

প্রয়োজন অনুযায়ী সেচ দিন।

ফসল সংগ্রহ

ফলের বাইরের রঙ পরিবর্তন, খোসা নরম হওয়া এবং বিচ্ছিন্ন স্তর তৈরি হওয়ার মাধ্যমে পরিপক্বতা নির্ধারণ করা হয়। পাকা ফল সহজেই লতা থেকে আলাদা হয়ে যায়।

ਪੰਜਾਬੀ (Punjabi)

ਖਰਬੂਜ਼ਾ – ਖੇਤੀ ਪ੍ਰਣਾਲੀ

ਮੌਸਮ

ਖਰਬੂਜ਼ਾ ਗਰਮ ਅਤੇ ਸੁੱਕੇ ਮੌਸਮ ਵਿੱਚ ਵਧੀਆ ਤਰੀਕੇ ਨਾਲ ਵਧਦਾ ਹੈ ਅਤੇ ਚੰਗਾ ਸੁਆਦ ਦਿੰਦਾ ਹੈ। ਇਹ ਗਰਮੀ ਦੀ ਫਸਲ ਹੈ।

ਮਿੱਟੀ

ਖਰਬੂਜ਼ਾ ਮੁੱਖ ਤੌਰ 'ਤੇ ਰੇਤੀਲੀ ਅਤੇ ਦੋਮਟ ਮਿੱਟੀ ਵਿੱਚ ਦਰਿਆ ਕਿਨਾਰੇ ਉਗਾਇਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਹੋਰ ਕਿਸਮ ਦੀ ਮਿੱਟੀ ਵੀ ਢੁੱਕਵੀਂ ਹੈ। ਮਿੱਟੀ ਦਾ pH 6 ਤੋਂ 7 ਹੋਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ।

ਬੀਜ ਬਿਜਾਈ

ਮੈਦਾਨੀ ਇਲਾਕਿਆਂ ਵਿੱਚ ਨਵੰਬਰ ਤੋਂ ਮਾਰਚ ਅਤੇ ਪਹਾੜੀ ਇਲਾਕਿਆਂ ਵਿੱਚ ਅਪ੍ਰੈਲ ਤੋਂ ਮਈ ਤੱਕ ਬਿਜਾਈ ਕੀਤੀ ਜਾਂਦੀ ਹੈ। ਇੱਕ ਹਫ਼ਤੇ ਪੁਰਾਣੇ ਪੌਦੇ ਵੀ ਲਗਾਏ ਜਾ ਸਕਦੇ ਹਨ। ਬੀਜ ਦਰ 2-3 ਕਿਲੋ/ਹੈਕਟੇਅਰ ਹੈ।

ਖਾਦ ਅਤੇ ਖਾਦਾਂ

ਜ਼ਮੀਨ ਤਿਆਰ ਕਰਨ ਵੇਲੇ 30-50 ਗੱਡੀਆਂ ਗੋਬਰ ਖਾਦ ਪਾਓ। 80 ਕਿਲੋ ਨਾਈਟ੍ਰੋਜਨ, 40 ਕਿਲੋ ਫਾਸਫੋਰਸ ਅਤੇ ਪੋਟਾਸ਼ ਦੀ ਸਿਫਾਰਸ਼ ਕੀਤੀ ਜਾਂਦੀ ਹੈ। ਬਿਜਾਈ ਸਮੇਂ ਨਾਈਟ੍ਰੋਜਨ ਦੀ ਅੱਧੀ ਮਾਤਰਾ ਅਤੇ ਫਾਸਫੋਰਸ ਅਤੇ ਪੋਟਾਸ਼ ਦੀ ਪੂਰੀ ਮਾਤਰਾ ਪਾਓ। ਬਾਕੀ ਨਾਈਟ੍ਰੋਜਨ ਇੱਕ ਮਹੀਨੇ ਬਾਅਦ ਪਾਓ।

ਸਿੰਚਾਈ

ਲੋੜ ਅਨੁਸਾਰ ਸਿੰਚਾਈ ਕਰੋ।

ਕਟਾਈ

ਫਲ ਦਾ ਬਾਹਰੀ ਰੰਗ ਬਦਲਣਾ, ਛਿਲਕਾ ਨਰਮ ਹੋਣਾ ਅਤੇ ਵੱਖ ਹੋਣ ਵਾਲੀ ਪਰਤ ਬਣਨਾ ਪੱਕਣ ਦੀ ਨਿਸ਼ਾਨੀ ਹੈ। ਪੱਕੇ ਫਲ ਬੇਲ ਤੋਂ ਆਸਾਨੀ ਨਾਲ ਵੱਖ ਹੋ ਜਾਂਦੇ ਹਨ।

ଓଡ଼ିଆ (Odia)

ଖରବୁଜ – ଚାଷ ପ୍ରଣାଳୀ

ଜଳବାୟୁ

ଖରବୁଜ ଗରମ ଏବଂ ଶୁଷ୍କ ଜଳବାୟୁରେ ଭଲ ଭାବେ ବୃଦ୍ଧି ପାଏ ଏବଂ ଉତ୍କୃଷ୍ଟ ସ୍ୱାଦ ଦେଇଥାଏ। ଏହା ଗ୍ରୀଷ୍ମ ଋତୁର ଫସଲ।

ମାଟି

ଖରବୁଜ ପ୍ରଧାନତଃ ବାଲୁକାମୟ ଏବଂ ଦୋଆଣ ମାଟିରେ ନଦୀ କୂଳରେ ଚାଷ କରାଯାଏ। ଅନ୍ୟ ମାଟି ପ୍ରକାର ମଧ୍ୟ ଉପଯୁକ୍ତ। ମାଟିର pH 6 ରୁ 7 ମଧ୍ୟରେ ହେବା ଉଚିତ।

ବିଆ ବପନ

ମୈଦାନ ଅଞ୍ଚଳରେ ନଭେମ୍ବର ରୁ ମାର୍ଚ୍ଚ ଏବଂ ପାହାଡ଼ ଅଞ୍ଚଳରେ ଏପ୍ରିଲ ରୁ ମେ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ବପନ କରାଯାଏ। ଗୋଟିଏ ସପ୍ତାହର ଚାରା ରୋପଣ କରାଯାଇପାରେ। ବିଆ ହାର 2–3 କିଗ୍ରା/ହେକ୍ଟର।

ସାର ଓ ଜୈବ ସାର

ଜମି ପ୍ରସ୍ତୁତ ସମୟରେ 30–50 ଗାଡ଼ି ଗୋବର ସାର ଦିଅନ୍ତୁ। 80 କିଗ୍ରା ନାଇଟ୍ରୋଜେନ, 40 କିଗ୍ରା ଫସ୍ଫୋରସ ଏବଂ ପୋଟାଶ ସୁପାରିଶ କରାଯାଏ। ବପନ ସମୟରେ ନାଇଟ୍ରୋଜେନର ଅର୍ଧ ଏବଂ ଫସ୍ଫୋରସ ଓ ପୋଟାଶର ପୂର୍ଣ୍ଣ ମାତ୍ରା ଦିଅନ୍ତୁ। ଅବଶିଷ୍ଟ ନାଇଟ୍ରୋଜେନ ଗୋଟିଏ ମାସ ପରେ ଦିଅନ୍ତୁ।

ସିଚାଇ

ଆବଶ୍ୟକତାନ୍ୁସାରେ ସିଚାଇ କରନ୍ତୁ।

କଟାଇ

ଫଳର ବାହ୍ୟ ରଙ୍ଗ ପରିବର୍ତ୍ତନ, ଛାଲ ନରମ ହେବା ଏବଂ ବିଚ୍ଛିନ୍ନ ସ୍ତର ଗଠନ ହେବାରୁ ପକ୍ୱତା ଚିହ୍ନଟ କରାଯାଏ। ପକ୍ୱ ଫଳ ଲତାରୁ ସହଜରେ ଅଲଗା ହୋଇଯାଏ।